International Journal of Applied Research 2016; 2(11): 150-153

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(11): 150-153
www.allresearchjournal.com
Received: 04-09-2016
Accepted: 14-10-2016

डॉ. कमलेश सरीन
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग स्वामी श्रद्धानन्द कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ. कमलेश सरीन
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग स्वामी श्रद्धानन्द कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली, भारत

आधुनिकता, आधुनिकता बोध की आधारभूमि और घटक तत्व

डॉ. कमलेश सरीन

प्रस्तावना

आधुनिकता बोध कोई क्षण–बोध, निरर्थकता–बोध या आत्म निर्वासन नहीं है। सही आधुनिकता बोध इससे कहीं भिन्न है। उसके लिए प्रजातंत्र, मानववाद और समाजवाद की स्थितियां अनिवार्य हैं। इन्हीं स्थितियों एवं व्यवस्थाओं की विद्यमानता में एक सही एवं संगत आधुनिकता बोध की कल्पना की जा सकती है। आधुनिकता की राजनैतिक शक्ति 'प्रंजातंत्र' और 'समाजवाद' है। दार्शनिकता में आधुनिकता की शर्त है – 'मानववाद'।

प्रजातंत्र अंग्रेजी के क्मउवबतंबल शब्द का हिन्दी रूपान्तर है।

'द एडवान्स लनर्ज डिक्शनरी ऑफ करंट इंगलिश' के अनुसार, ''प्रजातंत्र सरकार की ऐसी प्रणाली है जिसमें सभी व्यस्क लोक अपने द्वारा चुने गए लोगों की सरकार बनाते हैं। ऐसा राज्य सभी लोगों को बोलने की स्वतंत्रता, धार्मिक और साम्प्रदायिक आजादी तथा अल्पसंख्यकों के अधिकारों को संरक्षण देता है।

'ए डिक्शनरी ऑफ फिलासफी' के अनुसार, ''ऐसी व्यवस्था जिसमें देश के सभी उत्पादन के साधनों पर सार्वजनिक क्षेत्र का नियंत्रण हो। इसमें (प्रंजातंत्र) पूंजीवाद का निषेध होकर सर्वहारा वर्ग के प्रभुत्व का प्रबंध होता है।

अतः प्रजातंत्र एक ऐसी व्यवस्था है, जो हर व्यक्ति के मान और बराबरी में विश्वास रखता है। जिसका आधार शुभ, संकल्प, प्रचार और शिक्षा आदि पर है।

परंतु पूंजीवादी समाज में प्रजातंत्र की स्थिति कुछ भिन्न हो जाती है।

गंगा प्रसाद विमल इस विषय में कहते हैं, ''पूंजीवादी समाजों में प्रजातंत्र, निजी लाभ की नीयत से सत्ता पर कब्जा रखने और सामाजिक स्तर पर भ्रष्टाचार द्वारा जन जीवन को प्रदूषित किए रखने की पद्धति बन गई है।''

विश्वस्तर पर पूंजीवादी प्रजातंत्र और जनवादी लोकतंत्र – दो प्रजातांत्रिक पद्धतियां बीसवीं शताब्दी के इस कालखण्ड में कार्यरत हैं।

व्यवस्थाओं के क्रम में प्रजातंत्र फिर भी आश्वस्त है क्योंकि उसमें सुधार की गुंजाइश है। वह मनुष्य के सामुदायिक विकास के लिए प्रतिबद्ध है और उसमें स्वतंत्रता की मानवीय उपस्थिति के उपक्रम मिलते हैं। वस्तुतः यही पक्ष हैं जहां से हम प्रजातंत्र और जनवादी प्रजातंत्र को आधुनिकीकरण के आधारों के रूप में देखते हैं।

'मानववादी' संज्ञा का प्रयोग सर्वप्रथम सोलहवीं शताब्दी के यूरोपीय पुनर्जागरण के लेखकों और विद्वानों के लिए किया गया। आधुनिक मानववाद जिसमें 'रिनेसां (पुनर्जागरण) ह्यूमैनिज़्म'' के श्रेष्ठ और स्थायी तत्व समाहित हैं, व्याप्ति तथा महत्व की दृष्टि से उससे कहीं अधिक प्रभावशाली तथा व्यापक आंदोलन है। मानववाद एक ऐसा दर्शन है जो मनुष्य को सृष्टि का केंद्र मानता है। मानववाद का आग्रह है कि विवेक और विज्ञान का उपयोग जीवन में पूरी निष्ठा के साथ किया जाए और प्रजातांत्रिक प्रणाली आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में अपनाई जाए।

हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार, ''पश्चिमी जगत में मध्यकाल की समाप्ति करने में जिन विचारधाराओं ने विशेष योग दिया है, उनमें से मानववाद एक प्रमुख विचारधारा है।''

मानविकी पारिभाषिक कोष के अनुसार, ''मानववादी दृष्टि का केंद्र श्रेष्ठ मानवीय मूल्य है।''

अतः मानववाद एक ऐसी विचारधारा अथवा दर्शन है जो मानव को सर्वेसर्वा मानकर चलती है। यह इस बात का खंडन करती है कि समस्त मूल्यों और प्रतिमानों का स्त्रोत कोई दिव्य सत्ता है।

समाजवाद अंग्रेजी के श्ैवबपंसपेउश का हिन्दी अनुवाद है। यह एक ऐसा मत है जो सामाजिक न्याय और बराबरी को महत्वपूर्ण समझता है। इसमें सारे श्रमिक राजनैतिक शक्ति अपने हाथ में ले लेते हैं ताकि कुछ धनी व्यक्तियों की सम्पत्ति को सामाजिक सम्पत्ति में बदला जा सके।

'द एडवान्स्ड लनर्ज डिक्शनरी ऑफ करंट इंगलिंश' के अनुसार, ''समाजवाद में भूमि, यातायात, बड़े उद्योग, प्राकृतिक खनिज आदि सभी का स्वामित्व एवं संबंध राज्य ैजंजमद्ध के हाथ में होता है अथवा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा नियंत्रित होता है।

डिक्शनरी आफ फिलास्फी में इसकी परिभाषा इस प्रकार है, ''समाजवाद एक ऐसी व्याख्या है, जिसमें देश के सभी उत्पादन के साधनों पर सार्वजनिक क्षेत्र का नियंत्रण हो। इसमें पूंजीवाद का निषेध होकर सर्वहारा वर्ग के प्रभुत्व का प्रबंध होता है।''

समाजवाद न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था की हजारों वर्ष लम्बी खोज का परिणाम है। शोषण से मुक्त लोगों के मध्य सहयोग के संबंध, सारे समाज के हित ने योजनाबद्ध आर्थिक ढांचा, सामाजिक उत्पादों का श्रम के अनुसार वितरण, राज्य का मेहनतकशों की सत्ता के रूप में रूपांतरण इत्यादि इसके मुख्य लक्ष्य हैं। समाजवाद को आधुनिकता बोध की आधार भूमि के रूप में स्वीकार किया गया है।

आधुनिकता और आधुनिकता–बोध के घटक तत्व – आधुनिकता निरंतर प्रवाहमान एवं गतिशील है। परिवर्तित हो रहे जीवन मूल्यों, अवधारणाओं तथा परिस्थितियों के साथ–साथ आधुनिकता के घटक भी बदलते रहते हैं। इसके प्रमुख घटक आधुनिकीकरण, औद्योगिकीकरण एवं शहरीकरण है। आधुनिकता की उद्गमस्थली इनसे निर्मित है।

आधुनिकता बोध के घटकों के रूप में रमेश कुंतल मेघ, 'परकीयकरण' और अप्रतिमानता की चर्चा करते हैं। ये तत्व पूंजीवादी समाजों में सर्वाधिक होते हैं। यह सकारात्मक आधुनिकता–बोध की अपेक्षा निषेधपरक आधुनिकता बोध के द्योतक हैं। जब समाज के मूल्यों का विघटन होता है, संबंध बिखरने लगते हैं, जीवन की पद्धतियों में अंतर आता है तभी परकीयकरण और अप्रतिमानता की स्थितियां आती हैं। इन्हें इस प्रकार चित्रित किया जा सकता है –

निषेधपरक आधुनिकता बोध

अप्रतिमानतापरकीयकरण असंगति आक्रोश हताशा विद्रोह आत्महत्या उपलब्धि

आत्मनिर्वासन अजनबियत अलगावअर्थहीनता

दुर्खेम ने अ–प्रतिमानता पर अच्छा काम किया है। अ–प्रतिमानता की स्थिति तब आती है जब सही वस्तु सही ढंग से नहीं मिलती। इसमें दो बातें होती हैं –

आत्महत्या और उपलब्धि आत्महत्या – जब मनुष्य समाज में राजनीति में अपने जीवन में अपने लिए वांछित अधिकारों की प्राप्ति में स्वयं को असमर्थ पाता है तो वह निराश होकर आत्महत्या की ओर बढ़ता है। परिस्थितियों से संघर्ष करने एवं जूझने की क्षमता उसमें नहीं रहती।

उपलब्धि – गलत रास्ते से सही वस्तु प्राप्त करना उपलब्धि है। पर उपलब्धि सकारात्मक और नकारात्मक दोनों होती हैं। इसमें अधिकार या वस्तु तो सही होती, परन्तु पाने का ढंग अनुचित होता है।

परकीयकरण – आधुनिकता के संदर्भ में परकीयकरण अथवा परायेपन की धारणा कार्ल मार्क्स से प्राप्त हुई है। यह एक ऐतिहासिक सामाजिक संघटना है। लेकिन

इसकी विचारधारा आधुनिकता की विधि भी है। यह व्यक्ति को ऐतिहासिक एवं सामाजिक संदर्भों से काट कर उसे अमूर्त मानव बना कर संत्रास और अकेलेपन में भटकने के लिए छोड़ देता है। आत्मनिर्वासन, अजनबियत, अलगाव तथा अर्थहीनता इसके मुख्य तत्व हैं।

आत्म निर्वासन – इस दशा में व्यक्ति 'स्व' से निर्वासित होता है। 'स्व' से निर्वासित होने का अभिप्राय है – अपनी रुचियों, संवेदनाओं, सम्भावनाओं से विमुख हो जाना है।

अजनबीपन – रमेश कुंतल मेघ के अनुसार, ''परकीयकरण के अंतर्गत जो अजनबीपन की जो दशा है, वह मूलतः गरीबी, अशिक्षा, जात–पांत, अन्याय, शोषण आदि के कारण किनारे फेंक दिये जाने के कारण उपजती है। आज के इस घोर मशीनी युग में स्थान की दूरी कम होने के साथ–साथ व्यक्ति और व्यक्ति के बीच की दूरी बढ़ी है। व्यक्ति अपने नए परिवेश में अजनबी महसूस करता है।

अलगाव – अलगाव 'करने' की स्थिति है। इसमें व्यक्ति स्वयं से, अपने परिवार, समाज, राजनीति, संस्कृति तथा अपनी परंपरा से कट जाता है। परकीयकरण के अंतर्गत एक ओर अजनबीपन की दशा है तो दूसरी ओर अलगाए जाने की अनुभूति भी है।

अर्थहीनता – जब काम का उचित फल न मिले तो अर्थहीनता जन्म लेती है। इसमें मनुष्य के सब कुछ व्यर्थ सा लगने लगता है। जीवन का अर्थ खो जाता है।

निषेधपरक आधुनिकता बोध के अन्य घटक तत्व इस प्रकार है –

असंगति की दशा में व्यक्ति जीवन और समाज को उद्देश्यहीन, सार्थकताहीन, अंतहीन और उलजलूल मानता है।

आक्रोश – जब मनुष्य सामाजिक, राजनीतिक व्यवस्था में व्याप्त असंगति, भ्रष्टाचार तथा विद्रूप को देखता है तो उसके मन में उनके प्रति आक्रोश का भाव पैदा होता है। वह सब कुछ विनष्ट करना चाहता है।

हताशा – जब आक्रोश के निकास का कोई मार्ग नहीं निकलता तब हताशा उत्पन्न होती है। यह व्यक्ति की तर्कशीलता एवं सोच को पंगु बना देती है।

विद्रोह –हताशा के बाद विद्रोह की स्थिति आती है। आधुनिकीकरण के मूल्यचक्र पूंजीवादी व्यवस्था से बंधे हुए हैं। इस विशिष्ट मूल्य चक्र का मनोवैज्ञानिक प्रकार्य मुख्यतः विद्रोह एवं आक्रोश बन पड़ा है।

उपरोक्त तत्वों के अतिरिक्त 'मानवीय संबंधों में परिवर्तन', 'संत्रास', 'मूल्यों का विघटन', 'यौन सम्बन्धों में उन्मुक्तकता' आदि भी निषेधपरक आधुनिकता बोध के घटक तत्व हैं। हमारे साहित्य में इनकी अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। मोहन राकेश ('एक और जिंदगी', 'आधे अधूरे'), उषा प्रियंवदा 'वापसी', निर्मल वर्मा 'लंदन की एक रात', 'वेद राही' 'हर रोज', विपिन कुमार अग्रवाल 'तीन अपाहिज' तथा नरेश मेहता आदि की रचनाओं में अकेलापन, अजनबियत, संत्रास, विसंगति बोध संबंधों का तनाव, अलगाव आदि की स्थितियां देखी जा सकती हैं। रमेश कुंतल मेघ प्रधान रूप से आधुनिकता बोध में विवेकहीनता, अजनबीपन, सनकीपन, निहिलिज्म, संशयात्मकता, निरर्थकता और शून्यता के तत्व मानते हैं। उनके विचार में आज हिंसा और आक्रोश, विद्रोह और प्रतिरोध, मोहभंग और अजनबीपन के छद्म मुखौटे और सुरक्षा कवच की भांति धोखा, हताशा और मृत्यु दैनिक जीवन के तथ्य घटनाएं एवम् यर्थाथ् बन चुके हैं।''

निष्कर्ष

शहरीकरण या नगरीकरण एक आधुनिक उदय है, इसलिए इसे यदि आधुनिकीकरण का प्रमुख आधार मान लिया जाय तो अत्युक्ति न होगी। औद्योगिक सभ्यता के सबसे प्रतिष्ठापरक शहर हैं। नगर के विकास, विस्तार तथा नगरीकरण की स्वनिर्भर प्रक्रिया के साथ ही किसी देश–विदेश अथवा क्षेत्र को आधुनिक, अनाधुनिक स्वीकार किया जाता है। अतः आधुनिकता आधुनिक सभ्यता तथा आधुनिक बोध के सही परिज्ञान के लिए नगरीकरण की प्रक्रिया तथा आधुनिक नगर बोध का स्पष्टीकरण अनिवार्य बन जाती है। शहरीकरण आबादी के इकट्ठा होने से हुआ इससे हमारे रोये–रेशे उखड़ गये। प्रत्येक आदमी मशीन हो गया, वह बाजार में आ गया, हर चीज यहां तक संबंध भी विनिमय का सामान बन गये। इससे संबंधों में बिखराव, अकेलापन और अजनबीयत उत्पन्न हुई। इसके फलस्वरूप संत्रास, विसंगति बोध, टूटते घर, असुरक्षा, वैवाहिक स्थिरता, संवादहीनता और मूल्यहीनता की स्थितियां उत्पन्न हुईं। केवल इतना ही नहीं इस नगरीकरण ने लोक संस्कृति को प्रदूषित किया है।

संदर्भ

1. डॉ. नगेन्द्र, 'आलोचक की आस्था'।
2. रमेश कुंतल मेघ, 'आधुनिकता बोध और आधुनिकीकरण'।
3. रामधारी सिंह 'दिनकर', 'आधुनिक बोध'
4. विपिन कुमार अग्रवाल, 'आधुनिकता के पहलू'।